प्रश्न : ईश्वर क्या है?

कृष्णमूर्ति : आप कैसे पता लगाएंगे? क्या आप किसी और की जानकारी को स्वीकार कर लेंगे? या आप खुद यह खोज करने की कोशिश करेंगे कि ईश्वर क्या है? प्रश्न पूछना बहुत सरल है, पर सत्य को अनुभूत करना प्रचुर प्रज्ञा, गहन संवाद तथा खोज की अपेक्षा रखता है।

अतएव पहला प्रश्न है, ईश्वर के विषय में किसी अन्य ने जो कहा है, क्या आप उसे ही मान लेने वाले हैं? इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह कौन है, कृष्ण, बुद्ध या ईसा मसीह, क्योंकि ये सभी गलती पर हो सकते हैं--इसी तरह आप का अपना विशिष्ट गुरु भी गलती पर हो सकता है। सत्य का पता लगाने के लिए, पूछताछ करने के लिए आप का मन अवश्य ही मुक्त होना चाहिए, इसका अर्थ है, यह यों ही विश्वास नहीं कर सकता, स्वीकार नहीं कर सकता। मैं सत्य का वर्णन कर सकता हूं, पर यह सत्य को स्वयं अनुभव कर लेने के समान नहीं है। सभी पवित्र पुस्तकें ईश्वर का वर्णन करती हैं, पर वह वर्णन ईश्वर नहीं है। 'ईश्वर' शब्द ईश्वर नहीं है, ऐसा ही है न?

सत्य का पता लगाने के लिए आपको उसे कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए, जो पुस्तकें, शिक्षक या अन्य व्यक्ति कहते हैं, इस सबसे कभी प्रभावित नहीं होना चाहिए। अगर आप इनसे प्रभावित हैं, तब आपको वही पता चलेगा, जो वे चाहते हैं कि आपको पता चले। आप को यह भी अवश्य मालूम होना चाहिए कि आप का मानस जो भी चाहता है उसकी प्रतिमा निर्मित कर सकता है; यह दाढ़ी वाले या एकाक्षी ईश्वर की कल्पना कर सकता है, यह उसे नीला या बैंगनी रंग का बना सकता है। अतः आपको अपनी ही इच्छाओं के प्रति सजग होना है, और अपनी ही इच्छाओं और आकांक्षाओं के प्रक्षेपणों के छलावे में नहीं आना है। अगर आपकी आकांक्षा ईश्वर को किसी विशिष्ट रूप में देखने की है, तो जो प्रतिमा आप देखेंगे, वह आपकी ही अभिलाषा के अनुरूप होगी, यह प्रतिमा ईश्वर नहीं है। अगर आप दुःख में हैं और दिलासा चाहते हैं, या अपनी धार्मिक महत्त्वाकांक्षाओं में भावुक एवं रोमानी महसूस करते हैं, तो अंततः आप ऐसे ईश्वर का निर्माण कर लेंगे, जो आपकी इच्छाओं की पूर्ति तो कर देगा, पर फिर भी वह ईश्वर नहीं होगा।

आप का मानस पूरी तरह से स्वतंत्र होना चाहिए, केवल तभी आप सत्य का पता लगा सकते हैं, न कि किसी अंधविश्वास को स्वीकार करके, या तथाकथित पवित्र पुस्तकों को पढ़ कर, या किसी गुरु के पीछे जाकर। जब यह स्वातंत्र्य होता है, बाह्य प्रभावों तथा आपकी अपनी इच्छाओं व आकांक्षाओं से वास्तविक मुक्ति होती है, ताकि आपका मन बिलकुल स्पष्ट हो--केवल तभी ईश्वर का पता लगाना संभव है। किंतु अगर आप बैठ कर अटकलबाजी करते रहें, तो आपका अनुमान आपके गुरु के अनुमान की तरह ही है और उतना ही भ्रामक भी।

प्रश्न : क्या हम अपनी अचेतन इच्छाओं के प्रति सजग हो सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : सबसे पहली बात तो यह है कि क्या आप अपनी चेतन इच्छाओं के प्रति सजग हैं? क्या आप जानते हैं कि इच्छा क्या है? क्या आप इसके प्रति सजग हैं कि यदि कोई आपके विश्वास के विरुद्ध कुछ कह रहा हो, तो प्रायः आप उसे नहीं सुनते हैं? आपकी इच्छा आपको सुनने से रोकती है। आपकी कामना ईश्वर को पाने की है, और कोई यह संकेत करता है कि जिस ईश्वर की आप कामना कर रहे हैं, वह आप ही की कुंठाओं और भय का परिणाम है, तो क्या आप उसकी बात सुनेंगे? बिलकुल भी नहीं। आप चाहते कुछ हैं, पर सत्य कुछ और है। आप खुद को अपनी इच्छाओं में सीमित कर लेते हैं। आप अपनी

चेतन इच्छाओं के प्रति अर्ध-सजग हैं, क्या ऐसा नहीं है? और वे इच्छाएं जो गहराई में छिपी हुई हैं, उनके प्रति सजग होना तो कहीं अधिक कठिन काम है। छिपी हुई इच्छाओं का पता लगाने के लिए, अपने ही प्रयोजनों को समझ पाने के लिए, खोज में लगे मन का पर्याप्त स्पष्ट एवं स्वतंत्र होना आवश्यक है। अतः पहले आप अपनी चेतन इच्छाओं के प्रति पूर्णतः सजग हों; तब जैसे-जैसे आप जो भी सतह पर है, उसके प्रति अधिकाधिक सजग होते जाएंगे, तब आप इसमें गहरे, और गहरे जा पाएंगे।

'लाइफ अहेड', अध्याय 4